''प्राथमिक विद्यालयों में आंगनबाड़ी के उपरांत एवं सीधे प्रवेश लेने वाले छात्रों के मध्य भाषा ज्ञान एवं गणितीय अभियोग्यता सम्बन्धित शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन''

शर्मिला रानी और डॉ0 भुवनेश शर्मा

सारांश–प्रस्तुत अध्ययन में**''प्राथमिक विद्यालयों में आंगनबाड़ी के उपरांत एवं सीधे प्रवेश लेने वाले छात्रों के मध्य भाषा ज्ञान एवं गणितीय अभियोग्यता सम्बन्धित शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन''**किया गया है। जिसका उद्देश्य आंगनबाड़ी द्वारा एवं सीधे प्रवेश लेने वाले पांचवी कक्षा के प्राथमिक विद्यालय के छात्रों के भाषा ज्ञान एवं गणितीय अभियोग्यता की तुलना करना है। अध्ययन में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में मेरठ जिले के दौराला तथा सुरूरपुर ब्लॉक के चार–चार प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया गया है। संबंधित शोध में आंकड़ों का एकत्रीकरण स्वनिर्मित प्रश्नावली के आधार पर किया गया है। अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुए– सीधे प्रवेश लेने वाले छात्रों की तुलना में आंगनबाड़ी द्वारा प्रवेश लेने वाले छात्रों की गणितीय अभियोग्यता, भाषा ज्ञान अभियोग्यता का शैक्षिक स्तर उत्तम पाया गया एवं सीधे प्रवेश लेने वाले छात्रों की तुलना में आंगनबाड़ी द्वारा प्रवेश लेने वाले छात्रों में भाषा ज्ञान की अधिक समझ है एवं आंगनबाड़ी के उपरांत प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश लेने वाले छात्रों में गणित विषय की रुचि अधिक है।

मुख्य शब्दावलीः– प्राथमिक विद्यालय,आंगनबाड़ी केंद्र, शैक्षिक उपलब्धि,

शर्मिला रानी, शोध छात्रा, शिक्षा विभाग, **स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय,मेरठ** उ0प्र0।
Email- sharmilasolanki85@gmail.com
डॉ0 भुवनेश शर्मा, **सह आचार्य**, शिक्षा विभाग, **स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय,मेरठ** उ0प्र0।
Email- sharmabhuvnesh40@gmail.com

प्रस्तावना–

शिक्षा समाज का दर्पण है। किसी देश की जनसंख्या में बच्चों को मुख्य स्थान प्राप्त है क्योंकि बच्चे भावी समाज हैं। अतः प्रत्येक समाज का यह दायित्व होता है कि वह अपने बच्चों की प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था करें ताकि उनकी नींव को सुद्रढ़ बनाया जा सके। शिक्षा का संस्कृति से गहरा संबंध है और वस्तुतः शिक्षा हमारी संस्कृति के संरक्षण एवं परिपोषण और अगली पीढ़ी को हस्तांतरण की एक प्रक्रिया मानी जाती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षा के सार्वजनीकरण हेतु देश की पंचवर्षीय योजनाओ में अनेक प्रावधान किए गए। भारतीय संविधान के अन्तर्गत अनुच्छेद 45 के तहत 14 वर्ष तक के बच्चों को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा प्रदान किये जाने का प्रावधान तैयार कर शिक्षा की व्यवस्था की गयी। पुनः 28 नवम्बर 2002 को 86वॉ संविधान संशोधन विधेयक पारित कर 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों की निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा को उनके मौलिक अधिकार के रूप में 21 ए के तहत घोषित कर दिया गया। जिससे समाज में एक नयी जागरूकता आयी। केन्द्र सरकार द्वारा सन् 2008 में एक कार्यक्रम सर्वशिक्षा अभियान के नाम से चलाया जा रहा है जो देश के सभी बच्चों को समान शिक्षा का अवसर प्रदान करता है। जिसका उददेश्य 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को उच्च गुणात्मकीय शिक्षा (8 वर्ष की प्रारंभिक शिक्षा) प्रदान करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 तथा इसकी कार्य योजना (1992) के तत्वाधान में सम्पूर्ण साक्षाव्य के लिए केन्द्र सरकार के प्रयास **''शिक्षा सबके लिए''** नाम से भी यह अभियान चलाया गया था जिसे वर्तमान में सर्वशिक्षा अभियान के नाम से जाना जाता है। 6–14 वर्ष के बच्चों को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने सम्बन्धी सर्वशिक्षा अभियान चलाने के साथ–साथ (0–6) वर्ष के बच्चों के भरण–पोषण एवं शिक्षा सम्बन्धी अनेक कार्य किये गये। जिसके लिए भारत में 1975 से संचालित आंगनवाडी केन्द्रों पर ध्यान आकर्षित किया गया। आंगनवाडी केन्द्रों पर मॉ एवं शिशु की देखभाल की साहयता प्रदान की जाती है। आंगनवाडी केन्द्रों की व्यवस्था ''**समेकित बाल विकास योजना**'' के अन्तर्गत बच्चों को भूख एवं कुपोषण से निपटने के साथ–साथ महिलाओं को गर्भ निरोधक परामर्श एवं (3–6) वर्ष

के बच्चों को पूर्व विधालयी शिक्षा प्रदान करने हेतु की गयी है। आंगनवाडी का आशय **आंगन आश्रय** से भी लगाया जाता है। बच्चों का 85 प्रतिशत मानसिक विकास 06 वर्ष तक पूर्ण हो जाता है अतः बच्चों के उचित विकास एवं शारिरिक वृद्धि को सुनिश्चित करने हेतु 06 वर्ष की आयु महत्वपूर्ण मानी जाती है। नवीन शिक्षा नीति 2020 में भी पूर्व बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की उचित व्यवस्था की गयी है,जिसके अनुसार– पूर्व बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा के सार्वजनिक हेतु आंगनवाडी केन्द्रों की गुणवत्ता उच्च की जायेगी तथा बालकों के खेलने के उपकरण एवं आंगनवाडी कार्यकत्रियेां को प्रशिक्षित कर सशक्तिकरण पर जोर दिया जा रहा है। नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार पहले से संचालित आंगनवाडी केन्द्रों को, प्राथमिक विद्यालय के साथ चल रहे आंगनवाडी केन्द्रों पर ई0सी0जी0ई0 के पाठयक्रम एवं प्रशिक्षित शिक्षकों को नियुक्त किया जायेगा।आंगनवाडी केन्द्रों का मुख्य उद्देश्य (0–6) वर्ष की आयु के बच्चों के पोषण एवं स्वास्थ्य के साथ साथ उनका मानिसक, शारीरिक एवं सामाजिक विकास पर ध्यान केन्द्रित कर प्राइमरी स्तर की शिक्षा हेतु तैयार करना है। परन्तु प्राइमरी स्तर का प्रत्येक बच्चा आंगनवाडी से शिक्षा प्राप्त करके आये यह लगभग सम्भव नहीं हो पा रहा है। जिस कारण कुछ छात्र सीधे प्राइमरी कक्षा में प्रवेश प्राप्त करते हैं। आंगनवाडी केन्द्रों को बालवाटिका के नाम से भी जाना जाता है। आंगनवाडी केन्द्रों पर पूर्व प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र एवं सीधे प्राथमिक कक्षा में प्रवेश लेने वाले छात्रों की बुद्धिलब्धि की तुलना करने हेतु यह अध्ययन आवश्यक है।

साहित्य की समीक्षा–

अधिकारी(2023) ने ''अ स्टडी ऑन आंगनवाडी सेन्टर एज ई0सी0सी0ई0 अन्डर दा आई0सी0डी0एस0 स्कीम इन कूच बिहार डिस्ट्रिक्ट'' के अध्ययन से सम्बन्धित निष्कर्ष में पाया कि महत्ता बढाने हेतु आधारभूत संरचना एवं संसाधनों में वृद्धि की जानी चाहिए।**यादव, (2023)** ने ''उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विधार्थियेां की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक पृष्ठ भूमि के प्रभाव का अध्ययन'' में पता लगाया कि शैक्षिक उपलब्धि में पाये जाने वाले अन्तर को कम करने की दिशा में कार्य करने की जरूरत है।**शाक्या, रॉय (2020)** ने ''अ स्टडी ऑन एजुकेशनल एक्टीविटी प्रोवाइडिड इन दा

आंगनवाडी सेन्टर ऑफ लखीमपुर डिस्ट्रिक्ट असम'' के अध्ययन में पाया कि 36 प्रतिशत आंगनवाडी केन्द्रों की कार्यअवधि 2 घण्टे व 14 प्रतिशत आंगनवाडी केन्द्रों की कार्यअवधि 2 घण्टे से अधिक है।96 प्रतिशत आंगनवाडी केन्द्रों पर 2–6 वर्षिय छात्र एक ही कक्षा में बैठते हैं तथा केन्द्रों पर शिक्षण हेतु खेल विधि का प्रयोग किया जाता है। आंगनवाडी केन्द्रों पर छात्रों की सीखने की प्रवृत्ति में वृद्धि होती है।**सोनी, कपूर ,वशिष्ठ (2020)** ने ''पूर्व प्राथमिक शिक्षाः एक परिचय''–पुस्तक के माध्यम से बताया कि शैक्षिक उपलब्धि में खेल विधि का अपना विशेष महत्व है।**शर्मा (2018)** ने ''पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धिका सम्बन्ध'' पर अध्ययन पर पता लगाया कि पारिवारिक वातावरण शैक्षिक परिवेश को प्रभावित करता है।**त्रिपाठी, मिश्रा (2016)** ने ''सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन'' में ज्ञात किया कि सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विधालयों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है। **गुप्ता, शर्मा (2014)** ने ''उच्च माध्यमिक स्तर के बालकों के अविभावकों के शैक्षिक स्तर का उनके बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं रूचियों पर प्रभाव'' का अध्ययन कर ज्ञात किया कि उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तरीय शिक्षा प्राप्त अभिभावकों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक उच्च होती है।

समस्या कथन–

''प्राथमिक विद्यालयों में आंगनवाडी के उपरान्त एवं सीधे प्रवेश लेने वाले छात्रों के मध्य भाषा ज्ञान एवं गणितीय अभियोग्यता सम्बन्धित शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन''।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. आंगनवाडी द्वारा एवं सीधे प्रवेश लेने वाले पांचवीं कक्षा के प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों के भाषा ज्ञान की अभियोग्यता की तुलना करना।

2. आंगनवाडी द्वारा एवं सीधे प्रवेश लेने वाले पांचवीं कक्षा के प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की गणितीय अभियोग्यता की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ–

1. आंगनवाडी द्वारा एवं सीधे प्रवेश लेने वाले पांचवीं कक्षा के प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों के भाषा ज्ञान की अभियोग्यता **में कोई अंतर नहीं है ।**

2. आंगनवाडी द्वारा एवं सीधे प्रवेश लेने वाले पांचवीं कक्षा के प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की गणितीय अभियोग्यता **में कोई अंतर नहीं है ।**

शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या–

प्रस्तुत अध्ययन में समग्र रूप में मेरठ जिले के उन प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों को लिया गया है जो वर्तमान समय में संचालित है।

न्यादर्श–

शोध कार्य हेतु मेरठ जिले के सरूरपुर (खुर्द) ब्लॉक तथा दौराला ब्लॉक के यादृच्छिक चार–चार (कुल आठ) प्राथमिक विद्यालयों का सर्वेक्षण कर अध्ययन सुनिश्चित किया गया है।

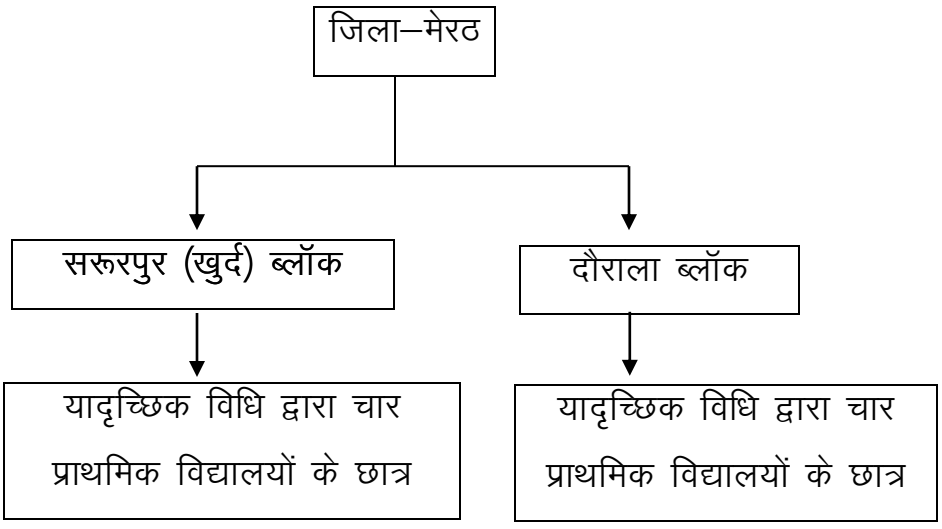

शोध उपकरण–

प्रस्तुत अध्ययन में आंकडों के एकत्रीकरण हेतु स्वंय निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधियॉ–

ऑकड़ो के विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु समान्तर माध्य, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण सांख्यिकी विधियों काप्रयोग किया गया है।

उद्देश्यः–1 आंगनवाडी द्वारा एवं सीधे प्रवेश लेने वाले पॉचवीं कक्षा के प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों के भाषा ज्ञान की अभियोग्यता की तुलना करना।

परिकल्पना–1आंगनवाडी द्वारा एवं सीधे प्रवेश लेने वाले पांचवीं कक्षा के प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों के भाषा ज्ञान की अभियोग्यता **में कोई अंतर नहीं है ।**

सारणी क्रमांक–1

आंगनवाडी द्वारा एवं सीधे प्रवेश लेने वाले पांचवी कक्षा के प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों के भाषा ज्ञान की अभियोग्यता को दर्शाते मानक विचलन क्रान्तिक अनुपात–

	No.	M	S.D	**t-ratio or C.R(critical ratio)=** $\frac{D}{S_{E_D}}$
सीधे प्रवेशित छात्र	$N_{(NA)\ Lang}$=42	$M_{(NA)\ Lang}$=5	$\sigma_{(NA)\ Lang}$ = 2.14	8.6956
आंगनवाडी द्वारा प्रवेशित छात्र	$N_{(NA)\ Lang}$=44	$M_{(A)\ Lang}$=10	$\sigma_{(A)\ Lang}$ = 3.0912	

t-ratio or C.R(critical ratio)= $\frac{D}{S_{E_D}}$

जहां D= दोंनों मध्यमानों का अन्तर

$$S_{ED} = \frac{M_{(A)Lang} - M_{(NA)Lang}}{\sqrt{\frac{\sigma^2_{(NA)Lang}}{N_{(NA)Lang}} + \frac{\sigma^2_{(A)\,Lang}}{N_{(A)Lang}}}}$$

$$t \text{ or } C.R = \frac{5}{\sqrt{\frac{4.7605}{42} + \frac{9.5555}{44}}}$$

$$t \text{ or } C.R = \frac{5}{\sqrt{0.1135 + 0.2171}}$$

$$= \frac{5}{\sqrt{0.3306}} = \frac{5}{0.5750} = 8.6956$$

t or C.R = 8.6956

Degree of FFeedom = ($N_{(NA)Lang} + N_{(A)Lang}{}^{-2}$)

Degree of Freedom = (42+44-2)

Degree of Freedom =86-2=84

For 84 DF Value of at 0.05 level = 1.99

For 84 DF Value of at 0.01 level = 2.63

स्पष्टीकरण:-1.

क्रान्तिक अनुपात 8.6956 टी– तालिका के दोनों स्तरों के वास्तविक मानों से जो क्रमशः1.99 (0.05 level) तथा 2.63(0.01 level)है; से अधिक है इसलिए यह दोनों स्तरों पर सार्थक हैं।अतः दोनों समूहों में अन्तर है। अतः सीधे प्रवेश लेने वाले छात्रों की तुलना में आंगनवाडी द्वारा प्रवेश लेने वाले छात्रों का भाषा ज्ञान का शैक्षिक स्तर उत्तम पाया गया ळें

उद्देश्य–2 आंगनवाडी द्वारा सीधे प्रवेश लेने वाले पांचवी कक्षा के प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की गणितीय अभियोग्यता की तुलना करना।

परिकल्पना–2 आंगनवाडी द्वारा एवं सीधे प्रवेश लेने वाले पांचवीं कक्षा के प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की गणितीय अभियोग्यता **में कोई अंतर नहीं** है।

सारणी क्रमांक–1.2

	No.	M	S.D.	**t-ratio or C.R(critical ratio)=** $\frac{D}{S_{E_D}}$
सीधे प्रवेशित छात्र	$N_{(NA)}$Maths =42	$M_{(NA)}$Maths=3.5	$\sigma_{(NA)\ Lang}$ = 1.6484	4.4091
आंगनवाडी द्वारा प्रवेशित छात्र	$N_{(NA)}$ Maths =44	$M_{(A)}$Maths =5	$\sigma_{(A)\ Lang}$ =1.5023	

t-ratio or C.R(critical ratio)= $\frac{D}{S_{E_D}}$

जहां D= Diffrence between the means

$$S_{ED} = \frac{M_{(NA)Maths} - M_{(A)Maths}}{\sqrt{\frac{\sigma^2_{(NA)Maths}}{N_{(NA)Maths}} + \frac{\sigma^2_{(A)\ Maths}}{N_{(A)\ Maths}}}}$$

$$t \text{ or } C.R = \frac{1.5}{\sqrt{\frac{2.7172}{42} + \frac{2.2569}{44}}}$$

$$t \text{ or } C.R = \frac{1.5}{\sqrt{0.0646 + 0.0512}}$$

$$= \frac{1.5}{0.3402}$$

t or C.R = 4.4091

Degree of Freedom = ($N_{(NA)Maths} + N_{(A)Maths}{}^{-2}$)

Degree of Freedom = (42+44-2)

Degree of Freedom =84

For 84 DF Value of at 0.05 level = 1.99

For 84 DF Value of at 0.01 level = 2.63

8

स्पष्टीकरण:-2.

क्रान्तिक अनुपात 4.4091 टी– तालिका के दोनों स्तरों के वास्तविक मानों से जो क्रमशः 1.99 (0.05 level) तथा 2.63(0.01 level) है; से अधिक है इसलिए यह दोनों स्तरों पर सार्थक हैं। अतः दोनों समूहों में अन्तर है। अतः सीधे प्रवेश लेने वाले छात्रों की तुलना में आंगनवाडी द्वारा प्रवेश लेने वाले छात्रों की गणितीय अभियोग्यता का शैक्षिक स्तर उत्तम पाया गया है।

निष्कर्ष–

1. उपरोक्त शोध के उपरान्त प्राप्त परिणामों के सांख्यिकी विश्लेषण के आधार पर यह जानकारी प्राप्त की गई है कि सीधे प्रवेश लेने वाले पांचवी कक्षा के छात्रों की आंगनवाड़ी के उपरांत प्रवेश लेने वाले छात्रों से अध्ययन में रुचि कम है।

2. आंगनबाड़ी से प्रवेश लेने वाले छात्रों की अध्ययन में अधिक रुचि है एवं वह अपनी पूर्व स्कूली शिक्षा के आधार पर प्राथमिक विद्यालय में आने के पश्चात अपनी पूर्व शिक्षा को प्राथमिक विद्यालय की शिक्षा से जोड़ने के पश्चात विषय को भली–भांति समझ पाते हैं।

3. आंगनबाड़ी द्वारा प्रवेश लेने वाले छात्रों की भाषा एवं गणितीय अभियोग्यता का स्तर सीधे प्रवेश लेने वाले छात्रों की तुलना में उत्तम पाया गया है। आंगनबाड़ी द्वारा प्रवेश लेने वाले छात्र सीधे प्रवेश लेने वाले छात्रों की तुलना में अति क्रियाशील प्रतीत हुए हैं।

सुझाव–

छात्रों को प्राथमिक स्तर पर नवीन ज्ञान प्रदान करने हेतु उन्हें सम्बन्धित पूर्व ज्ञान से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। परिवार बच्चे की प्रथम पाठशाला होती है परंतु यह औपचारिक साधन है। बच्चों को अनौपचारिक ज्ञान प्रदान करने हेतु पूर्व प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की गई है। जिसके लिए आंगनबाड़ी केंद्र एवं किडंर गार्डन पद्धति पर आधारित पूर्व प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की गई है। ब्लॉक स्तर पर किए गएशोध के आधार पर यह पता चला है कि अभिभावकों में पूर्व प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित जागरूकता का अभाव है, राज्य स्तर पर यह संख्या वृहद होगी।अभिभावकों को भी पूर्व प्राथमिक शिक्षा के विषय में जागरूक करना अत्यंत आवश्यक है। प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश पाने हेतु छात्रों की पूर्व प्राथमिक शिक्षा (आंगनबाड़ी केंद्र एवं अन्य) का प्रमाण पत्र अनिवार्य कर दिया जाना चाहिए। जिससे पूर्व प्राथमिक स्तर पर शिक्षा प्राप्त कर छात्र प्राथमिक स्तर पर नवीन ज्ञान की प्राप्ति कर सकेंगे जिससे शिक्षा की गुणवत्ता एवं शैक्षिक स्तरीय अभियोग्यता में वृद्धि सम्भव हो सकेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

अधिकारी, दीपक (2023) .अ स्टडी ऑन आंगनवाडी सेन्टर एज ई0सी0सी0ई0 अंडर द आई0सी0डी0एस0 स्कीम इन कूच बिहार डिसट्रिक्ट, जर्नल ऑफ इमर्जिंग टैक्नोलॉजीज एण्ड इनोवेटिव रिसर्च, 10(10), 82–89.

यादव, एल0, (2023). उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन; एजुकेशनल मेटामोर्फोसिंक, 2(2), 119–125.

सोनी, रोमिला, कपूर,राजेंद्र एवं वशिष्ठ कृष्णकांत (2020) . पूर्व प्राथमिक शिक्षा– एक परिचय; एन.सी.ई.आर.टी; नयी दिल्ली, श्री अरविन्द मार्ग, एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस,1–36.

शर्मा, सुधांशु, गुप्ता, सविता (2022) .उच्च माध्यमिक स्तर के बालकों के अभिभावकों के शैक्षिक स्तर का उनके बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं रूचियों पर प्रभाव का अध्ययन; जर्नल ऑफ इमर्जिंग टैक्नोलॉजीज एण्ड इनोवेटिव रिसर्च, 9(9), 875–883.

शाक्य,प्रणव, रॉय, रूपा(2020)अ स्टडी ऑन द एजुकेशनल एक्टिविटीज प्रोवाइडिड इन द आंगनवाड़ी सेन्टर ऑफ लखीमपुर डिसट्रिक्ट असम, अ मल्टी डिस्पिलेनरी ऑनलाइन जर्नल ऑफ नेताजी सुभाष ओपन यूनिवर्सिटी आफ इंडिया,3(1).

शर्मा, देवकी नन्दन (2018) .पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि का सम्बन्ध; इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट, 6(2), 765–769.

त्रिपाठी, विवेकनाथ त्रिपाठी, मिश्र, दुर्गेश कुमार(2016) .सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षक शिक्षा शोध पत्रिका, जुलाई, 10(3), 4–18.